>

Title: Need to waive off the loans of weavers in the Country.

श्री हरिकेवल प्रसाद (सलेमपुर) : सभापति जी, देश में कृषि क्षेत्र के बाद सबसे अधिक रोजगार बुनकरी के क्षेत्र में है परंतु सरकार द्वारा उचित संरक्षण और प्रसारण नहीं मिलने के कारण यह क्षेत्र बदहाली का शिकार है। आर्थिक तंगी के कारण अधिकांश बुनकर अपना पुस्तैनी धंधा छोड़कर रोजी-रोटी की तलाश में बड़े शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। अभी तक दर्जनों बुनकर आत्महत्या कर चुके हैं। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के एक बुनकर परिवार ने पेट की भूख मिटाने के लिए अपने दो साल के बेटे को ही बेच दिया। पिछले साल केन्द्र सरकार ने बुनकरों के लिए जो स्वास्थ्य बीमा योजना शुरु की, उसका लाभ सभी बुनकर परिवार नहीं उठा पाए क्योंकि गरीबी के चलते वे निर्धारित अंशदान करने में असमर्थ थे। किसानों का बैंक कर्ज माफ होने के बाद बुनकरों में भी यह आशा जगी कि सरकार उनकी बदहाली पर भी तरस खाएगी लेकिन बजट में कोई खास राहत नहीं दिये जाने से वे निराश हैं और मानसिक अवसाद की हालत में किसानों की तरह बुनकर भी कोई अप्रिय कदम उठा सकते हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि बुनकरों के सभी तरह के कर्जे को माफ करे तथा उनकी बेहतरी के लिए कदम उठाए।